आधुनिक रंगमंच और हिंदी नाट्य साहित्य: मोहन राकेश लिखित "आषाढ़ का एक दिन" - एक मूल्यांकन

खुशी कीर्तिकुमार धंदले

शोधछात्रा (बी.एस.सी सेम I), जी.आय.बागेवाडी महाविद्यालय, निपाणी, जि. बेळगाव, कर्नाटक.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263753

ABSTRACT:

यह शोध-आलेख मोहन राकेश द्वारा रचित "आषाढ़ का एक दिन" (१९५८) का आधुनिक हिंदी नाट्य साहित्य के संदर्भ में मूल्यांकन करता है। यह नाटक भारतीय रंगमंच के ऐतिहासिक विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है और इसे पहला आधुनिक हिंदी नाटक कहा जाता है। आलेख कालिदास और मल्लिका के मार्मिक प्रेम-संबंध तथा कलात्मक सृजन और व्यक्तिगत जीवन के बीच के द्वंद्व को गहराई से दर्शाता है। नाटक में दिखाया गया है कि कालिदास अपनी प्रतिभा और कर्तव्य के लिए प्रेम का त्याग करते हैं, जो एक सच्चे कलाकार की पहचान है। यह मूल्यांकन स्थापित करता है कि यह कृति आधुनिक रंगमंच की संवेदनशीलता और विचारधारा का सशक्त माध्यम बनी।

KEYWORDS:

मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, आधुनिक रंगमंच, कालिदास, प्रेम और सृजन द्वंद्व.

प्रस्तावना:

भारत का नाट्य – कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। नाट्यशास्त्र, संस्कृत नाट्य, लोकनाट्य, धार्मिक नाट्य (जैसे, रामलीला, नाट्यहेरिली आदि) से प्रारंभ हुआ, जो समय-समय पर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों के अनुरूप बदलता रहा है। यह इतिहास मुख्यत: तीन कालखंडों में बाँटा जा सकता है: पूर्व-स्वातंत्र्य (१९४७ तक), आधुनिक प्रारंभिक युग (१९४७ — १९७० तक), समकालीन और नव-प्रयोगी रंगमंच (१९७० — आज तक)।

सबसे पहले नाट्यशास्त्र जैसे ग्रंथों (भरतमुनि आदि) ने परिभाषाएँ दीं। लोकनाट्य जैसे (रामलीला, नटबाइट) जन-आदमी को जोड़ते थे। औपनिवेशिक युग में अन्य भाषाओं (अंग्रेजी, बंगाली, मराठी आदि) का आरंभ हुआ। हिन्दी रंगमंच के प्रारंभिक साहित्य में तीन-चार प्रकार के नाटक प्रमुख थे: ऐतिहासिक नाटक जो राजशाही, वीर-कथाएँ जैसे विषय लेते थे। धार्मिक नाटक, जहाँ लोक-मर्यादा, संस्कृति, धर्म आदि की बातें होती थी। सामाजिक आर्थिक विषय धीरे-धीरे प्रकट होने लगे – सामाजिक बुराई, विवाह प्रथा, आदि।

भारतेंदु हरिश्चंद्र (१८५० — १८८५) हिन्दी रंगमंच के आरंभिक आधुनिक नाट्य लेखकों में गिना जाता है। जयशंकर प्रसाद, उपेंद्रनाथ अश्क, भुवनेश्वर आदि ने हिन्दी नाटक को साहित्यिक ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। इस काल में आई.पी.टी.ए. (IPTA) जैसे संगठनों ने सामाजिक चेतना जागृत करने की दिशा में काम किया।

स्वातंत्र्य के बाद हिन्दी रंगमंच पर कई बदलाव आए जैसे मंच-निर्माण और निर्देशन की नई तकनीकों का उपयोग किया गया। "आषाढ़ का एक दिन" (मोहन राकेश — १९५८) को हिन्दी रंगमंच में पहला, "आधुनिक" नाटक माना जाता है। धर्मवीर भारती का "अंधा युग" (१९५३) प्रसिद्ध हुआ जो भारतीय रंगमंच में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लेकर आया। रंगमंच अब केवल मनोरंजन नहीं, विचारों का माध्यम बनता जा रहा है।

(१९८० — २१वीं सदी) में नए समकालीन रंगमंच का आरंभ हुआ। जैसे थर्ड थियेटर - बादल सिरकार ने "आंगन मंच" और "थर्ड

थियेटर" की अवधारणा पेश की। भाषा-प्रयोग और स्थानीयता - हिन्दी रंगमंच ने "हिन्दुस्तानी/तटस्थ भाषा" से लेकर क्षेत्रीय बोलियों का प्रयोग बढ़ाया है। आज हिन्दी रंगमंच में मल्टीमीडिया प्रयोग, स्थानीय एवं क्षेत्रीय रंगमंचों की पुनरुद्धार, थिएटर फेस्टिवल्स, कार्यशालाएँ, कॉलेजों में रंगमंच शिक्षा का झलकियाँ मिलती हैं।

मोहन राकेश "आषाढ़ का एक दिन" - एक मूल्यांकन :

मोहन राकेश का जन्म ८ जनवरी १९२५ में अमृतसर, पंजाब में हुआ था। "आषाढ़ का एक दिन" नाटक (१९५८) में प्रकाशित हुआ। यह नाटक तीन अंकों का है। नाटक का पहला अंक में आसमान में मेघ गरज रहे हैं और घनघोर वर्षा हो रही है। तभी मल्लिका बाहर से भीगी हुई अंदर आती है। वह बहुत प्रसन्न है, क्योंकि उसने इस बरसात का आनंद उठाया है। किंतु उसकी माँ अंबिका उसके इस आचरण से काफी चिंतित है और क्रोधित भी, क्योंकि उसे पता है वह कालिदास के साथ थी। वह कालिदास को पसंद नहीं करती है। थोड़ी देर बाद कालिदास राजपुरुष दंतुल के बाण से आहत हरिण शावक के प्राण की रक्षा के लिए उसे लेकर अंदर आता है और मल्लिका से उसे थोड़ा सा दूध पिलाने को कहता है। राजपुरुष दंतुल भी अपने शिकार को खोजते हुए वहाँ आ जाते हैं। कालिदास और दंतुल में वाद-विवाद होता है। कालिदास हरिण शावक को लेकर चला जाता है। दंतुल को राजपुरुष होने का घमंड है किंतु जैसे ही मल्लिका से दंतुल को पता चलता है कि वे ऋतुसंहार के लेखक कालिदास हैं, तो उसका स्वर बदल जाता है और वह क्षमा माँगने को तैयार हो जाता है। क्योंकि सम्राट ने उन्हीं को लेने आचार्य वररुचि के साथ उसे भेजा है। कालिदास का उज्जयिनी में राजसम्मान किया जाएगा। यह सुनकर मल्लिका अत्यंत प्रसन्न होती है, परंतु अंबिका को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता।

तभी वहाँ पर मातुल आ जाता है जो कालिदास का संरक्षक है। वह कालिदास की तरह भावुक न होकर एक व्यावहारिक व्यक्ति है। वह राजसम्मान के इस अवसर को किसी भी प्रकार खोना नहीं चाहता। वह बताता है कि कालिदास राजसम्मान लेने से मना कर रहा है। इस पर अंबिका चिढ़ते हुए कहती है कि "सम्मान प्राप्त होने पर सम्मान के प्रति प्रकट की गई उदासीनता व्यक्ति के महत्व को बढ़ा देती है।"(१)

इसके बाद ग्रामपुरुष निक्षेप का आगमन होता है। वह मातुल को बताता है कि आचार्य वररुचि ने उन्हें बुलाया है। मातुल निक्षेप को डाँटता है कि वह आचार्य को छोड़कर क्यों चला आया है। इसके बाद मातुल चला जाता है। निक्षेप अंबिका को बताता है कि कालिदास मंदिर में चला गया है। फिर मल्लिका और निक्षेप जगदंबा के मंदिर चले जाते हैं। इसी क्रम में विलोम का भी प्रवेश होता है। वह मल्लिका से प्रेम करता है जबकि उसे पता है कि मल्लिका कालिदास को चाहती है। वह अंबिका को बताता है कि उसने मल्लिका को जगदंबा के मंदिर की ओर जाते हुए देखा है। वह बताता है कि उसे मल्लिका की बड़ी चिंता हो रही है। अंबिका और विलोम में बातें होने लगती हैं। विलोम यह जानने को उत्सुक है कि कालिदास अकेले उज्जयिनी जाएगा या मल्लिका के साथ। इसके बाद मल्लिका विलोम से रुष्ट होकर उसे वहाँ से जाने को कहती है। विलोम वहाँ से चला जाता है। कालिदास उज्जयिनी नहीं जाना चाहते। मल्लिका कालिदास से उज्जयिनी जाने का आग्रह करती है। मल्लिका को कालिदास की प्रतिभा पर पूरा विश्वास है। वह कालिदास को स्थानीय कवि के रूप में नहीं देखना चाहती है। वह चाहती है कि वह उज्जयिनी जाकर नए-नए कीर्तिमान रचे, नए-नए साहित्य रचे। उनकी कीर्ति दूर तक फैले। इसके लिए उसे कालिदास का वियोग क्यों न सहना पड़े। इसी अभिलाषा से वह कालिदास को उज्जयिनी जाने के लिए मना लेती है। कालिदास उठकर चला जाता है और उसी तरह की मेघ गर्जना होती रहती है। यहीं पर पहला अंक समाप्त हो जाता है।

नाटक के दूसरा अंक कालिदास के जाने के कुछ वर्षों बाद का है। अंबिका अस्वस्थ रहने लगी है और आर्थिक अभावों की पूर्ति के लिए मल्लिका को बाहर काम करना पड़ता है। मल्लिका अपनी माँ अंबिका के लिए औषधि तैयार कर रही होती है। उसी समय निक्षेप आता है और दोनों में वार्तालाप होने लगता है। राजधानी से आने वाले व्यवसायियों के माध्यम से वह उनकी कृतियों को मँगाकर पढ़ती रहती है। उसे इस बात का संतोष है कि उसके स्नेह और आग्रह के कारण कालिदास राजधानी जाने को तैयार हुए थे। बातचीत के दौरान निक्षेप बताता है कि कालिदास अब वह कालिदास नहीं रह गए हैं। वहाँ के वातावरण के अनुसार वह सुरा और सुंदरी में मग्न रहने लगे हैं। उन्होंने किसी विदुषी राजकुमारी से विवाह कर लिया है और अब वह कश्मीर का राजकाज भी संभालने जा

रहे हैं। इसी यात्रा के बीच वह इस ग्राम में भी कुछ समय के लिए रुकेंगे। उनका नया नाम अब मातृगुप्त है। सारा गाँव आज उनके स्वागत की तैयारी कर रहा है। तभी राजसी वेशभूषा में एक घुड़सवार वहाँ से गुजरता है। उसे पता चलता है कि संभवतः वह कालिदास है और फिर वह बाहर निकल जाता है। यह सूचना मल्लिका को विचलित कर देती है। तभी रंगिनी और संगिनी का प्रवेश होता है। ये दोनों मल्लिका के घर का निरीक्षण करती हैं। वे कालिदास के जीवन की पृष्ठभूमि का अध्ययन कर रही हैं। वे मल्लिका से उस प्रदेश की वनस्पतियों, पशु-पक्षी और दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं और अन्य विषयों के ऊपर प्रश्न करती हैं, परंतु कुछ भी असाधारण न दिखने पर निराश होकर लौट जाती हैं। उसी समय दो राजपुरुष अनुस्वार और अनुनासिक आते हैं। वे दोनों अपने को देव मातृगुप्त अर्थात कालिदास का सेवक बताते हैं। ये दोनों मल्लिका को कालिदास की अर्धांगिनी विदुषी प्रियंगुमंजरी के आने की सूचना देते हैं। वे मल्लिका के घर में कुछ व्यवस्था परिवर्तन करना चाहते हैं, परंतु बिना कुछ किये ही वापस चले जाते हैं।

इसके बाद मातुल के साथ प्रियंगुमंजरी का आगमन होता है। प्रियंगु जानती है कि मल्लिका कालिदास की प्रेयसी है और कालिदास के मन में उसके लिए स्नेह है। उसे मालूम है कि कालिदास की समस्त रचनाओं की प्रेरणा मल्लिका और वह परिवेश है। प्रियंगु मल्लिका के घर का परि-संस्कार कराना चाहती है। वह मल्लिका को अवसर देती है कि वह जिस राज अधिकारी से चाहे उससे विवाह कर ले और उसकी संगिनी बनकर रहे। किंतु ये दोनों बातें मल्लिका ठुकरा देती है और वह उसी हाल में खुश रहना चाहती है। इसी समय विलोम आता है। वह इसलिए वहाँ आता है कि यदि कालिदास वहाँ आए तो वह उसके व्यक्तित्व में आए परिवर्तन को सबके सम्मुख उजागर कर सके। वह कालिदास के उसके घर की तरफ आने और बिना रुके चले जाने पर व्यंग्य करता है जिससे मल्लिका आहत होती है। वह विलोम को बार-बार जाने के लिए कहती है। विलोम चला जाता है। मल्लिका रो रही होती है। अंबिका उसे समझाते हुए कहती है "अब भी रोती हो? उसके लिए? उस व्यक्ति के लिए जिसने...?"(२) मल्लिका की सिसकियों के साथ दूसरा अंक भी समाप्त हो जाता है।

नाटक का तीसरा अंक भी आषाढ़ के एक दिन से ही प्रारंभ होता

है। अंबिका अब नहीं है। उसका घर अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। पालने में मल्लिका के अवैध की एक संतान है। अब मल्लिका की इस वर्षा में भीगने की कोई रुचि नहीं है। तभी बारिश में भीगता हुआ मातुल अंदर आता है। जिस सत्ता सुख की लालसा से मातुल उज्जयिनी गया था उन सब से अब उसका मोहभंग हो गया है। वह बताता है कि कालिदास ने कश्मीर का शासन भार त्याग दिया है और सन्यास ग्रहण कर लिया है। मातुल के जाने के बाद कालिदास का प्रवेश होता है। वह बताता है कि यहाँ से जाने के बाद वह सुख-सुविधाओं, आमोद-प्रमोद और साहित्य सृजन में भले ही व्यस्त रहा हो, किंतु वह अपने ग्राम और मल्लिका से कभी अलग नहीं रहा। वह बार-बार अपने पुराने अनुभवों को ही सृजित करता रहा। परंतु अब वह इस कृत्रिम जीवन से थक चुका है। वह शासक मातृगुप्त नहीं रहना चाहता अब पुराना कालिदास बनकर ही लौटना चाहता है और आगे वह बचा हुआ जीवन मल्लिका के साथ व्यतीत करना चाहता है। किंतु घर के अंदर से बच्चे के रोने की आवाज़ आती है और विलोम के आने से उसे वस्तुस्थिति का बोध होता है कि मल्लिका का विवाह हो चुका है। विलोम और कालिदास के बीच कुछ बातचीत होती है। कालिदास मल्लिका से कहता है "मैंने कहा था कि मैं अथ से आरंभ करना चाहता हूँ। यह संभवतः इच्छा का समय के साथ द्वंद्व था। परंतु देख रहा हूँ कि समय अधिक शक्तिशाली है क्योंकि वह प्रतीक्षा नहीं करता।"(३) इसके बाद कालिदास चला जाता है। नाटक यहीं पर समाप्त हो जाता है।

निष्कर्ष:

मोहन राकेश द्वारा रचित आषाढ़ का एक दिन हिंदी नाट्य साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील नाटक है। यह नाटक प्रसिद्ध संस्कृत कवि कालिदास के जीवन के एक काल्पनिक लेकिन भावनात्मक पक्ष को प्रस्तुत करता है, जिसमें प्रेम, त्याग, और कला के प्रति समर्पण की गहरी भावना झलकती है। नाटक में कालिदास और मल्लिका का प्रेम मुख्य केंद्र में है, परंतु इसके समानांतर कालिदास की काव्य-प्रतिभा और रचनात्मक यात्रा भी दिखाई गई है। जब कालिदास को उज्जयिनी का आमंत्रण मिलता है, तो उनके सामने एक बड़ा द्वंद्व खड़ा होता है—प्रेम और कर्तव्य के बीच चुनाव का। अंततः वह अपने कर्तव्य, यश और कला को प्राथमिकता देते हैं और मल्लिका को पीछे छोड़

उज्जयिनी चले जाते हैं। यह त्याग उनके रचनात्मक विकास की राह खोलता है, लेकिन उनके निजी जीवन में खालीपन और पीड़ा भी भर देता है।

नाटक का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि एक सच्चा कलाकार वह होता है जो अपने भावनात्मक और व्यक्तिगत सुखों से ऊपर उठकर समाज और सृजन के लिए कार्य करता है। कालिदास का मल्लिका से विदा लेना केवल एक प्रेम कहानी का अंत नहीं, बल्कि एक महान कवि के जन्म की शुरुआत है। इस प्रकार, आषाढ़ का एक दिन न केवल प्रेम और त्याग की कहानी है, बल्कि यह कला और जीवन के बीच संतुलन की तलाश का प्रतीक भी है।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश
2. आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश
3. आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.